राज्य अध्याय 2

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर की उपस्थिति के विषय में जागरूकता के लिए, उसकी आवाज़ सुनने और उसके आत्मा के माध्यम से परमेश्वर द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।***

अपने समूह और परमेश्वर के राज्य से सम्बन्धित इस अध्याय को प्रभु के हाथों में समर्पित करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **उत्पत्ति 32,37,39 और 45**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** ***(या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (उत्पत्ति 32,37,39 और 45) से शान्त समय में क्या सीखा है।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें और लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) ***(परमेश्वर का राज्य)*** **(2) लूका 18:16-17**

दो-दो करके ***समीक्षा करें।***

(2) परमेश्वर के राज्य में बच्चों का स्वागत करें। लूका 18:16-17। बालकों को मेरे पास आने दो, और उन्हें मना न करोः क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है। मैं तुस से सच कहता हूँ कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक के समान ग्रहण न करेगा वह उसमें कभी प्रवेश करने न पाएगा।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) ***(रोमियों के नाम पत्री)*** **रोमियों 1:1-17**

एक दल के रूप में बाइबल अध्ययन करने का उद्देश्य यीशु मसीह और एक दूसरे के साथ अपने संबंध में उन्नति करना है। यह एक दूसरे की सहायता के लिए है कि हम बाइबल का ज्ञान प्राप्त करें उसे समझें और उसकी शिक्षाओं का अभ्यास करें। इस कारण से यह आवश्यक है कि दल के सदस्य एक दूसरे को बाइबल अध्ययन में भाग लेने के लिए उत्साहित करें। दल के हर एक सदस्य की भागिदारी आवश्यक है। यदि कोई कुछ कह रहा है और वह पूर्ण रूप से सही न भी हो तो उसे वह बंद नहीं करना चाहिए (धार्मिक रूप से)। दल के अगुवे और सदस्यों को एक साथ मिलकर सीखने के

लिए उत्साहित करना चाहिए कि वे बाइबल के शिक्षाओं को खोजें और उन पर विचार करें। दल के हर एक सदस्य को यह महसूस होना चाहिए कि जब वह बोल रहा है तो बाकि के सदस्य उसे *सुनते उसे गम्भीरता से लेते* और *स्वीकार करते हैं।* दल के सदस्य एक दूसरे के साथ बाइबल के ज्ञान में प्रतिस्पर्धा नहीं कर रहें, लेकिन एक दूसरे को बढ़ाने के लिए और विश्वास के साथ साझा करने के लिए उत्साहित करने के द्वारा एक दूसरे से प्रेम कर रहे हैं।

नीचे दिये गये बाइबल अध्ययन के उदाहरणों में अच्छी तरह से दल के अगुवे की सहायता के लिए सोचा गया है जिससे उसे बाइबल अध्यय की तैयारी करने या किसी कठिन प्रश्न के विषय में दल की सहायता करने में मदद मिले जिस पर दल चर्चा कर रहा हो। आपके बाइबल अध्ययन में दल के सदस्यों द्वारा खोजी गई चीजों से अलग चीज़ें और पूछे गए प्रश्नों की अपेक्षा अलग प्रश्न हो सकते हैं।

रोमियों 1:1–17 का अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों का प्रयोग करें।

परिचय। रोमियों की पत्री प्रेरित पौलुस द्वारा 57 ई. में कुरिन्थ से रोम में रहने वाले मसीहियों को लिखी गयी थी। रोमियों 1:1–7 में लेखक, प्रेरित पौलुस की बुलाहट और कार्य शामिल हैं। और रोमियों 1:8–17 में रोम के लोगों को लिखे गए इस पत्र के विषय का परिचय मिलता है। रोमियों 1:16 कहता है, "क्योंकि मैं सुसमाचर से नहीं लजाता, इसलिए कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिये, पहले तो यहूदी फिर यूनानी के लिए उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।" रोमियों को लिखा गया पौलुस का पत्र सुसमाचार की सामर्थ के बारे में सिखाता है! यह सिखाता है कि सुसमाचार लोगों को धर्मी ठहराने और शुद्ध करने के लिए परमेश्वर की सामर्थ है। सुसमाचार लोगों के लिए परमेश्वर का संदेश है कि कैसे वे उद्धार पा सकते और एक नए मनुष्य में बदल सकते हैं!

चरण 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइए हम एक साथ रोमियों 1:1–17 पढ़ें।

आइए हम बारी–बारी एक–एक पद तब तक पढ़ें, जब तक कि हम इन आयतों को पूरा न पढ़ लें पढ़ना पूरा न कर लें।

चरण 2. खोज करें। **अवलोकन**

विचार करें। इस गद्याशं में आपके लिए कौन सा सत्य महत्वपूर्ण है?

या इस पद में से कौन सा सत्य आपके दिमाग या दिल को छूता है?

लिख लें। एक या दो सत्यों की खोज करें जिन्हें आप समझते हैं। उनके विषय में सोचें और अपने विचारों को अपनी नोट–बुक में लिखें।

साझा करें। (समूह के सदस्यों के सोचने और लिखने के दो मिनट बाद, एक एक करके उन विचारों को एक दूसरे के साथ बाटें)

आइए हम एक दूसरे के साथ उन बातों को साझा करें, जिन्हें हमने खोजा है।

(स्मरण रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग–अलग चीजें साझा करेंगे)

1:1–7

खोज 1. **प्रेरित पौलुस अपना परिचय किस प्रकार देता है।**

रोमियों को लिखा यह पत्र किसी भी व्यक्ति का अविष्कार नहीं था, लेकिन यह सुसमाचार का एक प्रेरणात्मक प्रकाशन था जो एक विशेष व्यक्ति अर्थात प्रेरित पौलुस को प्राप्त हुआ। प्रेरित पौलुस अपना परिचय "यीशु मसीह के दास" के रूप में देते हैं, जो यीशु मसीह का प्रेरित होने के लिए और परमेश्वर के सुसमाचार (अच्छी खबर) का प्रचार करने के लिए अलग किये गये थे। सुसमाचार का संदेश सब बातों के ऊपर है, यह नहीं कि मनुष्यों को उद्धार पाने के लिए क्या करना चाहिए, लेकिन यह कि परमेश्वर ने यीशु मसीह में लोगों के उद्धार के लिए क्या किया (रोमियों 1:1)। नए नियम में सुसमाचार का संदेश पुराने नियम में प्रकट की गई प्रतिज्ञा का भाग है जिसके बारे में भविष्यद्वक्ताओं ने सिखाया (रोमियों 1:2; प्रेरितों 24:14; 26:22)। सुसमाचार का विषय यीशु मसीह, उसकी मृत्यु और पुनरूत्थान है। उसका पुनरूत्थान स्वर्ग में उसकी वर्तमान स्थिति को दर्शाता है (रोमियों 1:3–4)। अपने प्रेरित होने के काम को पौलुस ने इस अलौकिक व्यक्ति अर्थात यीशु मसीह से प्राप्त किया। उसका सेवा करने का स्थान केवल उसका अपना नगर नहीं था, लेकिन दूसरे राष्ट्र भी थे (रोमियों 1:5) और इसमें वे लोग भी शामिल थे जो रोम में रहते हैं (रोमियों 1:6)। पौलुस ने अक्सर अपने पत्र की शुरूआत मसीहियों के लिए परमेश्वर के अनुग्रह और परमेश्वर की शांति की कामना करते हुए की (रोमियों 1:7)।

1:8–17

खोज 2. **प्रेरित पौलुस ने रोमियों को अपने पत्र के विषय का परिचय किस प्रकार दिया।**

रोमियों के पत्र का विषय "यहूदियों और अन्यजातियों (गैर–यहूदी) दोनों के लिए विश्वास से उद्धार है।" पौलुस सबसे बड़े विषय का परिचय प्रचार करते हुए बड़े सम्मानजनक तरीके से देते हैं। वह रोम में रहने वाले मसीहियों के प्रति अपना आदर और प्रेम प्रकट करते हैं। वह उनके विश्वास के लिए परमेश्वर का धन्यवाद देते हैं कि उनका विश्वास सारे जगत को प्रभावित कर रहा है (रोमियों 1:8)। वह उनके विषय में अपनी चिंता को उनके लिए लगातार प्रार्थना करने के द्वारा प्रकट करते हैं (रोमियों 1:9) और उनसे मिलने की अपनी इच्छा को प्रकट करते हैं (रोमियों 1:10) ताकि वह उन्हें स्थिर कर सकें (रोमियों 1:11) एक दूसरे को उत्साहित कर सकें (रोमियों 1:12) और उन में फल आते देख सकें (रोमियों 1:13)। पौलुस सुसमाचार प्रचार करने के लिए बाधित है इसलिए वह रोम में भी सुसमाचार का प्रचार करना चाहता है (रोमियों 1:14–15)। सुसमाचार प्रचार करने की उसकी उमंग उसकी सुसमाचार की स्पष्ट समझ से शुरू होती है। वह महसूस करता है कि यहूदियों ने सुसमाचार को नहीं समझा और अन्य जातियों ने सुसमाचार नहीं सुना। सुसमाचार केवल एक मात्र संदेश नहीं है, परन्तु एक सामर्थी माध्यम है जिसके द्वारा परमेश्वर उन लोगों को उद्धार (धर्मी) देते हैं, जो लोग जाति और संस्कृति के भेद के बिना विश्वास करते हैं (रोमियों 1:16)। सुसमाचार बहुत सामर्थी और प्रभावशाली है, क्योंकि यह धर्मी ठहरने के तरीके को सिखाता है, जो उद्धार पाने का सच्चा मार्ग है। उद्धार (धर्मी) का एक मात्र मार्ग विश्वास (प्रभु यीशु मसीह में विश्वास) है (रोमियों 1:17)।

इस प्रकार, पौलुस रोमियों को लिखे गए इस पत्र में दो विषयों का परिचय देता है। पहला उद्धार का तरीका है और दूसरा वे लोग हैं जिनके लिए उद्धार की पेशकश की जानी चाहिए। उद्धार केवल विश्वास के द्वारा है और उद्धार की पेशकश संसार के सभी लोगों के लिए है यहूदी और अन्यजाति दोनों के लिए।

चरण 3. प्रश्न। व्याख्या

विचार करें। इस गद्यांश में कौन सा प्रश्न आप अपने इस दल से पूछना चाहेंगे?

आइए रोमियों 1:1-17 में सभी सत्यों को समझने की कोशिश करें और जो बातें हमें समझ नहीं आई उनके बारे में प्रश्न पूछें।

लिख लें। अपने प्रश्न को यथा संभव स्पष्ट रूप से तैयार करें। फिर अपनी नोटबुक में अपना प्रश्न लिखें।

साझा करें। (दल के सदस्यों को सोचने और लिखने के लगभग दो मिनट बाद, प्रत्येक व्यक्ति को अपने प्रश्न साझा करनें दें।)

चर्चा करें। (फिर इनमे से कुछ प्रश्नों को चुनें और उन्हें अपने दल में एक साथ चर्चा करके उत्तर देने का प्रयास करें।)

(निम्नलिखित प्रश्न उन प्रश्नों के उदाहरण हैं जो कुछ छात्र पूछ सकते हैं और कुछ नोट्स प्रश्नों की चर्चा के बारे में हैं।)

1:3-4

प्रश्न 1. **यीशु मसीह के पुनरुत्थान का क्या अर्थ है?**

ध्यान दें। पौलुस कहता है कि "परमेश्वर का सुसमाचार उसके पुत्र के विषय में है जो अपने मानव स्वभाव के अनुसार दाऊद का वंशज था, और जो पवित्रता की आत्मा के भाव से मुर्दों में से जी उठने के कारण परमेश्वर का पुत्र ठहरा।" बिना पुनरूत्थान के यीशु मसीह की मृत्यु का कोई अर्थ नहीं।

(1) यीशु मसीह का पुनरूत्थान परमेश्वर द्वारा मसीह के उद्धार के पूर्ण कार्य की स्वीकृति को सिद्ध करता है।

कोई भी अन्य भविष्यद्वक्ता जो इस पृथ्वी पर रहा या जिसने इतिहास में भविष्यद्वक्ता होने का दावा किया, मुर्दो में से *जीवित* नहीं हुआ (देखें, मरकुस 8:31)! संसार के इतिहास के सभी भविष्यद्वक्ता (दूसरे धर्मो के भविष्यद्वक्ताओं को मिलाकर) अभी भी अपनी कब्रों मे पड़ें हैं। यीशु मसीह एक मात्र ऐसा व्यक्ति है जो मुर्दो में से जी उठा और आज भी जीवित है! यह तथ्य साबित करता है कि यीशु मसीह सब से बड़ा भविष्यद्वक्ता है और वह भविष्यद्वक्ता से कहीं बढ़कर है! उसका पुनरूत्थान साबित करता है कि परमेश्वर ने हमें बचने के लिए उसकी प्रतिस्थापन मृत्यु (हमारे स्थान पर) को स्वीकार कर लिया है।

(2) यीशु मसीह का पुनरूत्थान यीशु मसीह की वर्तमान स्थिति को प्रकट करता है।
यीशु मसीह ने संसार के उद्धारकर्ता और इस जगत का स्वामी होने का दावा किया। मुर्दों में से उनका पुनरूत्थान उनके सभी दावों की वैधता का निर्णायक प्रमाण है। और यह उनकी सभी शिक्षाओं के सत्य का शक्तिशाली प्रदर्शन है।

रोमियों 1:3–4 में हम पढ़ते हैं कि मुर्दों में से उनके पुनरूत्थान के द्वारा, यीशु मसीह ''सामर्थ के साथ परमेश्वर के पुत्र ठहरे (आदेश दिया, घोषित किया)''। वचन 3 और वचन 4 के बीच में अंतर यीशु मसीह के मानवीय और अलौकिक स्वभाव में अंतर नहीं है लेकिन मसीह के मानवीय स्वभाव के दो तत्वों के बीच है। वचन 3 बताता है कि वह अपने पुनरूत्थान से पहले क्या थे और वचन 4 बताता है कि वह अपने पुनरूत्थान के बाद क्या *बन गए।* अतंर मसीह के मानवीय रूप में निन्दा की स्थिति और उनकी मानवीय स्थिति की बुलंदी के बीच है! यीशु मसीह हमेशा से ही ''परमेश्वर के पुत्र'' थे, उनके पास हमेशा से ही वह *अलौकिक स्वभाव* था *(अलौकिक स्थिति)।* लेकिन उनके पुनरूत्थान से पहले उनके *मानवीय स्वभाव* को ''शरीर'' के रूप में वर्णित किया गया जो पाप और मृत्यु के कारण ''कमज़ोर'' है। उनका मानवीय स्वभाव संसार के पापों के कारण कमज़ोर था जिन्हें उन्होंने अपने ऊपर ले लिया और इसका कारण यह था कि उन्हें अभी भी इन पापों के लिए मरना था। लेकिन अपनी मृत्यु में उन्होंने मानवीय स्वभाव की सभी करमज़ोरियों को दूर कर दिया और पाप और मृत्यु के साथ हर एक संबंध को काट डाला। उनके पुनरूत्थान में उनका मानवीय स्वभाव (उसका शरीर) बदल (रूपांतरित हो गया) गया था इसलिए उन्हें रोमियों 1:4 में ''पवित्रता की आत्मा और 1कुरिन्थियों 15:45 में ''जीवन दायक आत्म'' के रूप में संबोधित किया गया। उनका पुनरूत्थित मानवीय स्वभाव शक्तिशाली है और पवित्र आत्मा से इतना पूर्ण और सामर्थ पाया हुआ और पवित्र आत्मा के इतने नियंत्रण में है कि 2कुरिन्थियों 3:17–8 में उन्हें ''प्रभु जो आत्मा है'' और ''प्रभु की आत्मा'' कहा गया है। <u>यीशु मसीह का पुनरूत्थान उन्हें ''प्रभुता के एक ऐसे स्तर पर ले आया है जो पूर्ण रूप से पवित्र आत्मा के नियंत्रण में है''!</u>

1:5

प्रश्न 2. **<u>''सभी जातियों में से लोगों को बुला कर विश्वास के द्वारा आज्ञाकारिता के लिए प्रेरिताई मिली'' इस अभिव्यक्ति का क्या अर्थ है?</u>**

ध्यान दें। मूल पाठ में कहा गया है कि पौलुस को अनुग्रह और प्रेरिताई मिली की उसके नाम के कारण सब जातियों के लोग विश्वास करके उसकी मानें। हमें कैसे ''विश्वास की आज्ञाकारिता'' इस शब्द को समझें? हाँलाकि संभव है कि हम इसकी व्याख्या एक सामान्य संबंधकारक के रूप में करें: ''विश्वास (मसीही) का पालन'' लेकिन यह बेहतर होगा कि हम इसकी व्याख्या एक व्यक्तिपरक के रूप में करें: ''आज्ञाकारिता जो (व्यक्तिगत) विश्वास में शामिल है''। वास्तविक मसीही आज्ञाकारिता में यीशु मसीह पर विश्वास करने की विशेषता शामिल है (यूहन्ना 6:28–29) और वास्तविक मसीही विश्वास में मसीह की आज्ञाकारिता की विशेषता है (यूहन्ना 14:21,23)। इसका अर्थ बहुत बड़ा है। जिस ''विश्वास'' का प्रचार पौलुस ने किया उसका अर्थ केवल यीशु मसीह को एक बार अपने उद्धार कर्ता के रूप में स्वीकार करना ही नहीं है। पौलुस ने जिस तरह के विश्वास को बढ़ावा देना चाहता

था, वह उद्धारकर्ता और परमेश्वर के रूप में मसीह पर विश्वास की आजीवन प्रतिबद्धता और मसीह की आज्ञाकारिता थी। सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा प्रेरित पौलुस ने लोगों को यीशु मसीह और उनकी शिक्षाओं के प्रति सम्पूर्ण हृदय से समर्पित जीवन जीने के लिए बुलाया।

1:6–7

प्रश्न 3. **"मसीह के होने के लिए बुलाए गए", "संत होने के लिए बुलाए गए" इन शब्दों का क्या अर्थ है?**

ध्यान दें। "बुलाए गए" शब्द के दो अलग अगल अर्थ हो सकते हैं।

(1) बाहरी बुलाहट।

यूहन्ना बपत्स्मिा देने वाले ने कहा कि "वह जंगल में *पुकारने वाले* का शब्द है।" यूहन्ना का अर्थ था कि, उसके प्रचार के द्वारा वह इस्राएलियों को यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए तैयार होने के लिए बुला रहा है (यूहन्ना 1:23)। इस संदर्भ में "बुलाहट" शब्द परमेश्वर की *बाहरी बुलाहट* को प्रकट करता है, जिसमें वह लोगों को विश्वास करने के लिए यीशु मसीह के सुसमाचार प्रचार के माध्यम से आमंत्रित करता है। हाँलाकि, अक्सर इस बाहरी बुलाहट की अपेक्षा की जाती है (1कुरिन्थियों 1:23)।

(2) आंतरिक बुलाहट।

"बुलाहट" शब्द का प्रयोग बाइबल में विशेष रूप से अर्थात परमेश्वर की *आंतरिक बुलाहट* के रूप में किया गया है, जिसमें वह उन लोगों को आकर्षित करता है जिन्हें उसने जगत की उत्पत्ति के पहले से मसीह में प्रबलता से चुन लिया। "परमेश्वर ने आदि से आपको चुन लिया है, कि आत्मा के द्वारा पवित्र बन कर, और सत्य की प्रतीती करके उद्धार पाओ। जिस के लिए उस ने तुम्हें हमारे सुसमाचार के माध्यम से *बुलाया* है" (2थिस्सलुनीकियों 2:13)।

सदैव ऐसे लोग होते हैं जो सुसमाचार प्रचार के द्वारा अपनी बाहरी बुलाहट प्राप्त करते हैं, लेकिन वह उसके साथ सहमत नहीं होते जो अविश्वासी ही बने रहते हैं (मत्ती 22:14)। लेकिन जो कोई भी पवित्र आत्मा के द्वारा अपने हृदय में आंतरिक बुलाहट प्राप्त करता है वह प्रबलता से यीशु मसीह के समीप आता है (यूहन्ना 6:44, 37)। रोमियों 1:6–7 में पौलुस यह शब्द परमेश्वर की आंतरिक बुलाहट के विषय में प्रयोग करता है। रोमियों के लोग मसीह के थे और अपने सदाचार के कारण संत थे और अपने हृदयों में पवित्र आत्मा के काम के द्वारा परमेश्वर की ओर से बुलाये गए थे। वे मसीह बन गए लेकिन इसलिए नहीं कि उनमें कोई बात थी, लेकिन सिर्फ परमेश्वर की प्रबल और प्रभावशाली बुलाहट के कारण। वे लोग जो "मेरे नाम के कहलाते हैं (शाब्दिक रूप सेः "जिन पर प्रभु का नाम पुकारा गया है") (प्रेरितों 15:17) परमेश्वर के चुने हुए लोगों को प्रदर्शित करता है। परिणाम स्वरूप वे उसी के हैं। इस प्रकार, जिन लोगों को परमेश्वर *बुलाता* है वे परमेश्वर के *चुनें* हुए लोग होते हैं (1कुरिन्थियों 1:24–30)। जिन लोगों को परमेश्वर *बुलाता* ये वह लोग होते हैं जिन्हें परमेश्वर उद्धार पाने और मसीह के स्वरूप में होने के लिए *चुनता* है (रोमियों 8:28–43)। "बुलाहट" का अर्थ लगभग "चुने हुए" के समान है। यह वास्तविक विश्वासियों का पद है (प्रकाशितवाक्य 17:14; यहूदा 1:1)। इस प्रभावशाली बुलाहट के आधार पर रोम के विश्वासी मसीह के थे और उन्हें संत बनाया

गया था (लोग जो परमेश्वर की सेवा और उसके लिए *समर्पित* जीवन जीने के लिए संसार *से अलग किए* थे)। ध्यान दें: "कलीसिया" शब्द यूनानी में "इकलीसिया" है, जिसका अर्थ है "परमेश्वर के बुलाए हुए लोग"।

1:14-16

प्रश्न 4. **सुसमाचार किस प्रकार परमेश्वर की सामर्थ्य है?**

ध्यान दें। पौलुस स्वयं को यूनानी भाषा बोलने वाले और संसार में रहने वाले अन्य सभी विदेशी लोगों का कर्ज़दार मानता है। वह अपनी सेवाकाई को विद्वान और सामान्य लोगों से जोड़ता है। और इसी कारण वह रोम में भी सेवकाई करने की इच्छा रखता है।

रोमियों 1:16 में पौलुस कहता है, "मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिए कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिए, पहले तो यहूदी फिर यूनानी के लिए उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है।" सुसमाचार सामर्थी है क्योंकि परमेश्वर इसके द्वारा कार्य करता है और इसका परिणाम सभी राष्ट्र के लोगों का उद्धार होता है।

(1) सुसमाचार परमेश्वर की सामर्थ्य है।

सुसमाचार परमेश्वर की सामर्थ्य है क्योंकि यह वह संदेश है जिसके द्वारा परमेश्वर कार्य करते हैं और जिसके द्वारा वह लोगों को उद्धार (धर्मी ठहराता) देते हैं। परमेश्वर लोगों को मनुष्य की बुद्धि या सामर्थ्य के द्वारा उद्धार नहीं देते लेकिन सुसमाचार के द्वारा देते हैं (1कुरिन्थियों 1:20-25)। सुसमाचार में परमेश्वर की सामर्थ्य "एक परमेश्वर" के संदेश द्वारा नहीं प्रकट हुई (यहूदी धर्म का एक ईश्वरवाद) या एक "सिद्ध नैतिक संहिता" (यूनानी धर्म का नैतिक जीवन) द्वारा नहीं, बल्कि "क्रूस पर चढ़ाए गए उद्धारकर्ता" और "केवल उस पर विश्वास द्वारा धर्मी ठहरने" के द्वारा प्रकट हुई। परमेश्वर की सामर्थ्य उस व्यक्ति को धर्मी (उद्धार) ठहराती है जो क्रूस पर चढ़ाए यीशु मसीह पर विश्वास करता है। "यीशु मसीह और उनका क्रूस पर चढ़ाया जाना" (1कुरिन्थियों 2:2)। वह सुसमाचार के संदेश का आदि (अल्फा) और अंत (ओमेगा) है (1कुरिन्थियों 1:18; 2:2; गलातियों 5:11; 6:14)।

(2) सुसमाचार का अलग अलग विश्वासियों पर एक शक्तिशाली प्रभाव है।

यीशु मसीह में प्रत्येक विश्वासी को बचाकर एक निश्चित स्थिति से एक दूसरी स्थिति में पहुंचाया जाता है। यीशु मसीह में प्रत्येक विश्वासी को कुछ निश्चित बुराईयों से बचाकर कुछ निश्चित आशीषों का आनंद लेने के लिए उद्धार दिया जाता है। यीशु मसीह में प्रत्येक विश्वासी को निम्न बुराईयों से बचाया जाता है:

- वह पापों की *दोष भावना* से बचाया जाता है क्योंकि उसके पाप क्षमा किए जाते हैं।
- वह पापों की *शर्म* से बचाया जाता है, क्योंकि उसका नाम और सम्मान फिर से पुर्नस्थापित किया जाता है।
- वह पापों की *भ्रष्टता* से बचाया जाता है, क्योंकि क्रूस पर बहा यीशु का लहू उसे पापों से शुद्ध करता है।
- वह पापों की *गुलामी* से बचाया जाता है, क्योंकि मसीह ने उसे पापों की सामर्थ्य से स्वत्रंत किया है।

- वह पापों के अनंत *दण्ड* से बचाया जाता है, जिसमें परमेश्वर से अलगाव और परमेश्वर का क्रोध और अनंत मृत्यु शामिल है, क्योंकि यीशु मसीह ने वह दण्ड उसके स्थान पर अपने ऊपर ले लिया!

मसीह में प्रत्येक विश्वासी निम्नलिखित आशीषों का आनंद उठाने के लिए बचाया जाता है।

- वह परमेश्वर की दृष्टि में एक आदर्श पवित्र *स्थिति* प्राप्त करता है।
- वह पवित्रता में *बढ़ने की क्षमता* प्राप्त करता है।
- वह *एक परिवर्तित और फलवंत जीवन जीने की क्षमता* प्राप्त करता है।
- वह *परमेश्वर की आशीषों का आनंद लेने के लिए* बचाया जाता है, जिसमें परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संगति, परमेश्वर का प्रेम और अनंत जीवन शामिल है।

(3) सुसमाचार का राष्ट्रों पर एक शक्तिशाली प्रभाव है।

सुसमाचार संसार के सभी राष्ट्रों के लोगों का उद्धार करता है! इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि किसी व्यक्ति की पिछली नागरिकता या धर्म क्या था, जब वह यीशु मसीह पर विश्वास करता है वह निश्चित रूप से उद्धार पाता है! बाइबल कहती है, ''पहले यहूदी, फिर यूनानी (गैर–यहूदी)''। यहाँ पर ''पहले'' शब्द का अर्थ ''विशेष रूप से'' नहीं है, क्योंकि सुसमाचार विशेष रूप से यहूदियों के लिए नहीं बनाया गया (रोमियों 3:9,22,29; 10:12)। इसका अर्थ है ''समय में पहले'' क्योंकि सुसमाचार पहले यहूदियों को प्रचार किया गया (मत्ती 10:5–6; प्रेरितों 13:46–47) फिर उसके बाद अन्यजातियों को प्रचार किया गया (मत्ती 28:19)।

''यूनानी'', यूनानी भाषा बोलने वाले अन्यजाति थे, जिनके साथ यहूदी उस समय सबसे अधिक परिचित थे। वे पृथ्वी पर रहने वाले सभी गैर–यहूदी राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

1:17 क

प्रश्न 5. **परमेश्वर की ओर से वह कौन सी धार्मिकता है जो सुसमाचार में प्रकट की गई?**

ध्यान दें। पौलुस कहता है, ''क्योंकि उसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से और विश्वास के लिए प्रकट होती है; (शाब्दिक रूप सेः विश्वास से विश्वास के लिए), जैसा लिखा है कि, 'धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा'।'' यहाँ परमेश्वर की ओर से धार्मिकता को परमेश्वर की विशेषता या चरित्रगुण नहीं समझा जा सकता, क्योंकि यह विश्वास से प्राप्त होती है। ''धार्मिकता'' शब्द को विभिन्न लोगों द्वारा अलग अलग रूप से परिभाषित किया गया है।

(1) धार्मिकता वह चीज़ नहीं जो मनुष्य के द्वारा अर्जित या स्थापित की जाती।

धार्मिक यहूदी पूरे प्रयास के साथ व्यवस्था को ताक पर रखकर अपनी धार्मिकता स्थापित करने की कोशिश कर रहे थे। वे ''धार्मिकता'' को व्यवस्था का पालन करने वाले व्यक्ति की नैतिक और धर्म सम्बन्धित धार्मिकता के रूप में मानते थे।

लेकिन यहूदी (और उनके जैसे अन्य धर्म) यह नहीं समझ पाए कि धार्मिकता को अर्जित या लोगों द्वारा स्थापित नहीं किया जा सकता। धार्मिकता केवल परमेश्वर की ओर से मिलती हैः यह यीशु मसीह के (मारे जाने, गाड़े जाने और पुनरूत्थान) के द्वारा अर्जित की गई और परमेश्वर की ओर से उन

लोगों को सेंत मेंत (मुफ्त में) दी जाती है जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं (रोमियों 10:3-4; फिलिप्पियों 3:9)। लोगों को यह जानना आवश्यक है कि "एक व्यक्ति व्यवस्था का पालन करने से धर्मी नहीं, लेकिन यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरता है" (गलातियों 2:16)।

संसार में आज मसीही लोगों का एक समूह यह सोचता है कि परमेश्वर पहले बच्चों को पानी से बपतिस्मा देकर फिर लोगों के भले कामों के द्वारा उन्हें धर्मी ठहराता है। वे ऐसा विश्वास करते है कि पानी के बपतिस्में में परमेश्वर का अनुग्रह उन पर उडेंला जाता है ताकि वे सहज रूप से धर्मी बनें और उसके बाद भले काम करें। इसलिए वे "धार्मिकता" को एक व्यक्ति की नैतिक और धर्म सम्बन्धित धार्मिकता के रूप में समझते हैं जिसे कलीसिया द्वारा बपतिस्मा दिया जाता है और वह भले काम करता है।

संसार में आज मसीही लोगों का एक और समूह भी है जो यह भी सोचता है कि परमेश्वर लोगों को सुसमाचार पर विश्वास के उनके स्वयं के कार्य और व्यवस्था का पालन और इसके बाद यीशु मसीह की शिक्षाओं का पालन करने के द्वारा धर्मी ठहराते हैं। वे विश्वास और सुसमाचार पालन को व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा के व्यक्तिगत कार्य के रूप में देखते है। साथ ही वे "धार्मिकता" को किसी व्यक्ति की नैतिक और धर्म सम्बन्धी धार्मिकता के रूप में मानते हैं जो अपनी स्वत्रंत इच्छा से यीशु पर विश्वास करता और उनकी शिक्षाओं का पालन करता है।

हालाँकि, धार्मिकता कुछ ऐसा नहीं है जो किसी व्यक्ति के द्वारा अर्जित या स्थापित की गई है।

(2) धार्मिकता कुछ ऐसी चीज है जिसे यीशु मसीह ने विश्वासी के लिए प्राप्त (अर्जित और स्थापित) किया गया है।

कोई भी मनुष्य अपनी धार्मिकता स्थापित नहीं कर सकता क्योंकि धार्मिकता परमेश्वर से आती है (रोमियों 3:21; गलातियों 2:16; फिलिप्पियों 3:9)! रोमियों के पूरे पत्र में धार्मिकता कुछ ऐसा नहीं है, जो स्वयं विश्वासी के द्वारा प्राप्त किया गया! धार्मिकता कलीसिया में कुछ करने या विश्वासी के के द्वारा स्वयं कुछ करने से प्राप्त नहीं होती और साथ ही।

धार्मिकता केवल परमेश्वर की ओर से और मसीह द्वारा दो हजार साल पहले विश्वासी के लिए किये गये उन कामों (उसने आवश्यक धार्मिकता को प्राप्त) द्वारा और जो वह वर्तमान समय में विश्वासी के लिए कर रहा है (वह इस धार्मिकता को उस में अनुग्रह के द्वारा विश्वासी को देता है), द्वारा दी जाती है। यीशु मसीह ने एक विश्वासी के स्थान पर स्वयं अपने जीवन, मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा इस धार्मिकता को विश्वासी के लिए *अर्जित* किया। इस पृथ्वी पर अपने पूर्ण और सिद्ध जीवन और क्रूस पर अपने प्रायश्चित बलिदान के द्वारा, यीशु ने पाप के प्रति परमेश्वर के पवित्र और धार्मिक क्रोध (कोप) को अपने ऊपर लिया (और इस प्रकार विश्वासी से दूर किया) (1पतरस 2:24)। इस प्रकार उन्होंने विश्वासी के लिए आवश्यक धार्मिकता को अर्जित किया और उस विश्वासी को दान किया। पूर्ण और सिद्ध रूप से धर्मी यीशु अधर्मी मनुष्य के पापों के लिए मरे, केवल उसके पापों के प्रायश्चित के लिए नहीं[1] (प्रायश्चित करने के लिए, आवश्यकता प्रायश्चित बलिदान करने के लिए) वरन विश्वासी का परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कराने के लिए[2] भी (टूटे हुए संबंध को फिर से स्थापित करने के लिए)(1पतरस 3:18; 2कुरिन्थियों 5:21)। उसने पापी के स्थान पर सभी पापियों के लिए पाप का सम्पूर्ण दण्ड चुकाया जो उस पर विश्वास करते हैं (मरकुस 10:45; यूहन्ना 10:11)।

धार्मिकता हैः

- पाप के विरोध में परमेश्वर के पवित्र और धार्मिक क्रोध के प्रति पूर्ण संतुष्टि।
- सभी पापों की सिद्ध क्षमा के संबंध में परमेश्वर की न्यायिक घोषणा।
- परमेश्वर के परिवार में सभी विश्वासियों की उचित स्वीकृति।

इसलिए धार्मिकता परमेश्वर की *न्यायिक धार्मिकता* है।

(3) धार्मिकता कुछ ऐसी है जो परमेश्वर के द्वारा विश्वासी को दिया (प्रदान) गया है।

परमेश्वर हर एक विश्वास करने वाले व्यक्ति को यीशु मसीह की धार्मिकता (जो यीशु मसीह ने प्राप्त की) प्रदान करते हैं। न्यायधीश के रूप में परमेश्वर उसे पूरी तरह से (100प्रतिशत) धर्मी *घोषित* करते है और अपनी दृष्टि में उससे पूरी तरह से (100प्रतिशत) धर्मी के *समान व्यवहार करते* हैं! इसलिए धार्मिकता किसी व्यक्ति की नैतिक और धर्म सम्बन्धी धार्मिकता नहीं है, बल्कि परमेश्वर की न्यायिक धार्मिकता हैं।

यीशु मसीह विश्वासी के लिए वह करते हैं जो विश्वासी स्वयं के लिए नहीं कर सकताः उन्होंने परमेश्वर की आवश्यक धार्मिकता को निम्न बातों के द्वारा प्राप्त कियाः

- विश्वासी के स्थान पर उसके लिए पूर्ण रूप से पवित्र और धर्मी जीवन व्यतीत किया।
- विश्वासी के स्थान पर उसके लिए मरे (दण्ड चुकाया)
- विश्वासी के स्थान पर फिर से जी उठे!

इस प्रकार जो धार्मिकता यीशु मसीह ने अर्जित की वह विश्वासी के खाते में (स्थाई रूप से, जोड़ दी गई, प्रदान की गई है) दे दी गई है। परमेश्वर विश्वासी को पूर्ण रूप से धर्मी *ठहराते* हैं और हमेशा के लिए उसके साथ पूर्ण रूप से धर्मी के *समान व्यवहार करते* हैं!

परमेश्वर अब विश्वासी को मसीह में एक "दोषी व्यक्ति" के रूप में नहीं मानते लेकिन, हमेशा एक "धर्मी व्यक्ति" मानते हैं, चाहे अभी भी उसका स्वभाव पापमय हो या उसने कई बार पाप भी किया हो। उसके पापों के लिए उसके स्थान पर प्रायश्चित बलिदान, *एक ही बार हमेशा के लिए* क्रूस पर चढ़ाया गया है। यह अविश्वसनीय है! इसके बाद परमेश्वर कभी भी उनके पापों या व्यवस्थाहीन कामों को याद नहीं करते (इब्रानियों 10:17-18)!

(4) धार्मिकता विश्वासी द्वारा प्राप्त की जने वाली कोई चीज़ है।

विश्वासी यीशु मसीह की धार्मिकता को विश्वास के द्वारा प्राप्त करते हैं! केवल यीशु मसीह की धार्मिकता ही विश्वासी को धर्मी (उद्धार) ठहरा सकती है। विश्वासी केवल विश्वास से ही इस धार्मिकता को ग्रहण कर सकते हैं।

---

[1] प्रायश्चित करने के लिए, मसीह स्वयं उनके पापों के लिए प्रायश्चित के बलिदान के रूप में संसार में आये। उन्होंने पापी के विरोध में परमेश्वर के पवित्र और धर्मी क्रोध (कोप) को अपने ऊपर लेकर उन्हें संतुष्ट किया। उन्होंने समस्या को हटाया।

[2] मेलमिलाप के लिए, मसीह ने समस्या के परिणामों को (परमेश्वर से अलगाव) हटा दिया और इस प्रकार परमेश्वर के साथ टूटे हुए रिश्ते को फिर से स्थापित किया।

1:17 ख

प्रश्न 6. **मनुष्य को किस प्रकार के विश्वास से धर्मी बनाया जाता है?**

ध्यान दें। विश्वास, जिसके द्वारा परमेश्वर किसी व्यक्ति को धर्मी ठहराता या उद्धार देता है (यह किसी व्यक्ति को परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी बनाना है), उसके तीन पहलू हैः

(1) विश्वास का पहला पहलू ज्ञान है।

किसी चीज़ पर विश्वास करने के लिए हमें यह *पता* होना चाहिए की हम क्या विश्वास करें। इस प्रकार, विश्वास सत्य को जानना और समझना है जैसा की वह बाइबल में प्रकट किया गया है। रोमियों 10:14-17 कहता है, "विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है"। इसलिए विश्वास यीशु मसीह के सुसमाचार सत्य पर आधारित है। ज्ञान में यीशु मसीह का जीवन, मृत्यु और पुनरूत्थान शामिल है। यह ज्ञान हमें दूसरों के द्वारा किए गए प्रचार और उन शब्दों (यूनानीः रिमाटा) से *प्राप्त* होता है जो यीशु मसीह ने उनके मन, विवेक और हृदय से कहे हैं (रोमियों 10:17)। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि विश्वास सत्य के ज्ञान के रूप में परमेश्वर के वचन और परमेश्वर के अनुग्रह पर आधारित है।

(2) विश्वास का दूसरा पहलू भरोसा है।

सत्य को सुनने और समझने के बाद भी, हमें यह *विश्वास या भरोसा* करना पड़ता है कि यह सत्य व्यक्तिगत रूप से हमारे लिए सत्य है। अपने मन और हृदय से हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने मसीह की धार्मिकता को हमारे लेखे में जोड़ दिया है, इसलिए जब वह हमारी ओर देखते हैं तो वह केवल यीशु मसीह की धार्मिकता को देखते हैं! हम इस तथ्य पर भरोसा करते या *निर्भर* रहते हैं कि परमेश्वर हमें यीशु मसीह द्वारा हमारे बदले किये गये कामों के कारण पूर्ण रूप से धर्मी (क्षमा किया हुआ) घोषित करते हैं। प्रेरितों 16:14 कहता है कि परमेश्वर हमारे हृदय को खोलता है कि हम विश्वास से सुसमाचार के संदेश का प्रतिउत्तर दें। परमेश्वर ने यह विश्वास हमें दिया है (प्रेरितों 13:48; 18:27; इफिसियों 2:8; फिलिप्पियों 1:29; 2पतरस 1:1)। जिस प्रकार का विश्वास हमें उद्धार दिलाता है वह बुद्धिमान दृष्टिकोण, गम्भीर स्वीकृति और उस सत्य पर भरोसा (आसरा) होता है जो सुसमाचार के संदेश में प्रकट होता है। इस प्रकार, विश्वास एक व्यक्तिगत समझ, निरूत्तर मन और भरोसे के रूप में परमेश्वर के अनुग्रह पर आधारित है।

(3) विश्वास का तीसरा पहलू कार्य है।

जब हम वास्तव में सुसमाचर की सच्चाई पर विश्वास करते हैं तो हम इसका जवाब अपने मन, हृदय, व्यवहार और कार्य से देते हैं। यदि हम वास्तव में सुसमाचार पर विश्वास करते हैं, तो हम *सक्रिय रूप से प्रतिक्रिया देगें : हम सत्य को स्वीकार करते और उसका अंगीकार करते हैं।* हमारे हृदय और मन में यह विश्वास होता है कि मसीह ही उद्धारकर्ता है और उसने हम से पूर्ण और सिद्ध उद्धार का वायदा किया है, हम इसे यीशु मसीह को उसके छुटकारे के पूर्ण किए गए कार्य के साथ अपने मन, हृदय और जीवन में *स्वीकार करने* के द्वारा (यूहन्ना 1:12) और अपने मुहँ से खुले तौर पर *अंगीकार* करने के द्वारा प्रकट करते हैं। हमारे दिलों में जो विश्वास है और हम अपने मुहँ से जो अंगीकार करते हैं उसके बीच पूर्ण सहमति होती है। रोमियों 10:9-10 में लिखा है, "यदि तू यीशु को प्रभु जानकर अपने मुँह से अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मुर्दो में से जिलाया, तो तू निश्चय ही उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है और उद्धार के लिए मुँह से अंगीकार किया जाता है।"

विश्वास जो उद्धार कराता है उसकी तुलना *पापी व्यक्ति के खाली हाथों* से की जा सकती है जो उद्धार के अनुग्रहपूर्ण उपहार को पाने के लिए दाता परमेश्वर के सामने फैले हुए हैं। विश्वास जो उद्धार कराता या धर्मी ठहराता है वह उस *कड़ी* के समान है जो मनुष्य की रेलगाड़ी (जीवन) को परमेश्वर के इंजन (अनुग्रह) से जोड़ती है। धर्मी ठहराने वाला विश्वास उद्धार कराता है, वह उस *पेड़ के तने* के समान है, जिसकी जड़ें परमेश्वर के अनुग्रह को दर्शाती हैं और जिसके फल धन्यवादी जीवन और अच्छे कामों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

1:17 ग

प्रश्न 7. **सुसमाचार में "धार्मिकता विश्वास से विश्वास के लिए" प्रकट होती है, इस शब्द का क्या अर्थ है?**

ध्यान दें। अनुवाद. "सुसमाचार में परमेश्वर की धार्मिकता (यूनानीः एक पिस्टिऑस) विश्वास *से* विश्वास (ईस पिस्टिन) के लिए प्रकट हुई है।" इस वाक्यांश की व्याख्या एक प्रगतिशील वाक्यांश के रूप में की गई हैः "एक कमजोर विश्वास से निरंतर एक मजबूत और पूर्ण विश्वास की ओर बढ़ना" या एक गहन वाक्यांश के रूप मेंः "केवल विश्वास के द्वारा", या "शुरूआत से अंत तक विश्वास के द्वारा।" हालाँकि, रोमियों 3:21-22 में इसी प्रकार के वाक्यांश का प्रयोग किया गया है। परमेश्वर की ओर से एक धार्मिकता पुराने नियम में प्रकट कि गई, अर्थात परमेश्वर की वह धार्मिकता (यूनानीः डिआ पिस्टिऑस) (माध्यम) जो "यीशु मसीह पर विश्वास *करने से* सब विश्वास करने वालों के लिए है।" (यूनानीः ईस पैंटॉस टूस पिस्टेओन्टॉस) (प्राप्तकर्ता)।

इसी तरह का एक और वाक्यांश गलातियों 3:22-23 में प्रयोग किया गया है। विश्वास प्रकट होने के बाद, "*विश्वास के द्वारा* (यूनानीः एक पिस्टिऑस) *सब विश्वास करने वालों को*" (यूनानीः टॉइस पिस्तोउसिन) (प्राप्तकर्ता) प्रतिज्ञा (जिसमें धार्मिकता शामिल है) दी गई।

इसी प्रकार रोमियों 1:17 (विश्वास के द्वारा विश्वास के लिए) परमेश्वर की धार्मिकता के *प्राप्तकर्ता* (विश्वासियों) दोनों *माध्यमों* पर जोर देता है।

इस प्रकार, रोमियों 1:17 का सर्वोत्तम अनुवाद हैः "सुसमाचार ऐसी धार्मिकता को प्रकट करता है जो परमेश्वर की ओर से आती है। यह धार्मिकता केवल *विश्वास के द्वारा* है (व्यवस्था के कामों से नहीं)। और यह धार्मिकता *सभी को दी जाती है जो विश्वास करते हैं* (जाति, संस्कृति या विश्वास की डिग्री के बिना) (प्राप्तकर्ता)!"

धार्मिकता यीशु मसीह के द्वारा अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान (धार्मिकता का *आधार*) के द्वारा अर्जित की गई है। धार्मिकता परमेश्वर के द्वारा उनकी असीम दया और अनुग्रह (प्रेम) (धार्मिकता का *स्रोत*) के द्वारा उन लोगों को दी गई है जो विश्वास करते हैं (धार्मिकता के *प्राप्त करने वाले*)। धार्मिकता को विश्वासी के द्वारा विश्वास के लिए प्राप्त किया जाता है (उसके व्यवस्था के धार्मिक कामों से नहीं) (इस धार्मिकता को प्राप्त करने का *माध्यम*)।

1:17 घ

प्रश्न 8. **इन शब्दों का क्या अर्थ हैः "धर्मीजन विश्वास से जीवित रहेगा"?**

ध्यान दें। अनुवाद। "जैसा की लिखा हैः धर्मी जन (व्यक्ति) विश्वास से (यूनानीः एक पिस्टिऑस) जीवित

रहेगा'।" यह वाक्यांश "धार्मिकता" की बात नहीं करता बल्कि "धर्मी व्यक्ति" की बात करता है। कुछ लोग इसकी व्याख्या इस प्रकार करते हैः "धर्मी (व्यक्ति) विश्वास के द्वारा (अर्थातः स्वयं के विश्वास के काम से) जीवित (अर्थता, होगा/ अनंत जीवन प्राप्त करेगा) रहेगा"। तब उसके "विश्वास" को अनंत जीवन का *आधार* माना जाता है। <u>लेकिन विश्वास कभी उद्धार पाने का *आधार* नहीं होता; बल्कि उद्धार प्राप्त करने का *माध्यम* होता है</u>।

रोमियों 1:17 का प्रश्न हबक्कूक 2:4 से लिया गया है और इसका अनुवाद केवल इस प्रकार किया जा सकता हैः "धर्मी व्यक्ति विश्वास से (परमेश्वर के लिए या परमेश्वर की उपस्थिति में) जीवित रहेगा।"

रोमियों 1:16 विश्वास को उस *साधन* के रूप में महत्व देता है जिसके द्वारा एक व्यक्ति धर्मी *ठहरता* है। रोमियों 1:17 पहले विश्वास पर एक *माध्यम* के रूप में बल देता है जिसके द्वारा एक विश्वासी मसीह की धार्मिकता को प्राप्त करता है और फिर (हबक्कूक 2:4 के हवाले से) एक ऐसे *माध्यम* के रूप में जिसके द्वारा *एक धर्मी व्यक्ति अपना जीवन* (इस पृथ्वी पर) जीता है (वह मसीह की प्राप्त धार्मिकता को अपनी जीवन शैली के रूप में व्यक्त करता है)।

इस प्रकार, पुराने नियम और नए नियम दोनों में इस तथ्य पर ज़ोर दिया गया है कि प्रभु में विश्वासी केवल विश्वास के द्वारा धर्मी (उद्धार) ठहराए जाते हैं और उसके बाद विश्वास ही से अपने जीवन को जीना (धर्मी लोगों के रूप में) जारी रखते हैं।

<u>चरण 4. लागू करना।</u> **अनुप्रयोग**

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-विमर्श करें और रोमियों 1:1-17 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी नोटबुक अर्थात स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची निम्नलिखित है।)

(याद रखेंः प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

1. <u>रोमियों 1:1-17 से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।</u>

1:1 जब परमेश्वर आपको एक प्राचीन की सेवा सौंपत हैं (चाहे एक चरवाहे या एक प्रचारक या शिक्षक के रूप में) तो आपको अभी भी *एक दास* ही होना चाहिए स्वामी नहीं (अधिकारवादी अगुवा)।

1:1 परमेश्वर कुछ लोगों को कुछ विशेष कार्यों में उनकी सेवा करने के लिए अलग करते हैं।

1:2 पुराने नियम में सुसमाचार पहले से ही घोषित है। आपको बाइबल को एकता के रूप में मानना चाहिए।

1:5 परमेश्वर के प्रति खुले रहें ताकि वह आपको अनुग्रह और गैर–मसीहियों को आज्ञाकारिता में बुलाने का काम दें जिसमें विश्वास शामिल है।

1:7 सभी मसीही परमेश्वर के द्वारा "संत" होने के लिए बुलाए गए हैं, अर्थात, बुराई से अलग होकर परमेश्वर के लिए समर्पित लोग।

1:8 एक सच्चा मसीही दूसरों का अभिनंदन परमेश्वर के अनुग्रह और शांति से करता है।

1:8 परमेश्वर का धन्यवाद हो जो वह विश्वासियों के जीवन में कर रहें हैं जिन्हें आप जानते हैं।

1:9–10 दूसरे लोगों के लिए प्रार्थना करें।

1:11 आत्मिक वरदान जो दूसरे मसीहियों को मजबूत बनाते हैं, उदाहरण के लिए चंगाई, शिक्षा, ज्ञान, अगुवाई आदि।

1:12 अपने अगुवों को प्रोत्साहित करने से न डरें।

1:13 निम्नलिखत बातों को अपने जीवन का लक्ष्य मानकर विचार करें: दूसरे लोगों के जीवन में स्थाई प्रभाव डालनें के बारे में सोचें।

1:14 मसीहियों पर सभी जाति और श्रेणीं के लोगों के प्रति एक ज़िम्मेदारी है।

1:15 दूसरे शहरों में सुसमाचार प्रचार करने की योजना बनाएँ।

1:16 एक मसीही होने में शर्म न करें, क्योंकि आपका संदेश ससांर में सबसे शक्तिशाली संदेश है!

1:17 परमेश्वर की स्वीकृति प्राप्त करने के लिए कभी धर्म के कामों, अच्छे कामों और व्यवस्था का पालन करने पर निर्भर न रहें।

2 . रोमियों 1:1–17 के व्यक्तिगत लागूकरण के उदाहरण।

मैं यह सुनिश्चित करना चाहता हूँ कि मेरा विश्वास मसीह को उद्धारकर्ता के रूप में *स्वीकार करने का केवल एक बार का कार्य* नहीं है, बल्कि *जीवनभर उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में मसीह के प्रति विश्वास और आज्ञापालन की प्रतिबद्धता* है। मुझे अब एहसास हुआ कि बाइबल में 'विश्वास' पूरे दिल से मसीह और उनकी शिक्षाओं के प्रति समर्पित जीवन है।

जब में उद्धार का सुसमाचार प्रचार करता हूँ, तो मैं दोनों *बुराईयों* पर जोर देना चाहता हूँ, *जिनसे* मसीह में विश्वासियों को बचाया गया, और *आशीषें जिन* के लिए उन्हें बचाया जा रहा है। मैं यह प्रचार करना चाहता हूँ कि मसीह में प्रत्येक विश्वासी को दोष और शर्म की स्थिति से बचा कर पूर्ण धार्मिकता: पूर्ण क्षमा और आदर के साथ स्वीकृति की स्थिति में लाया जाता है। मसीह में प्रत्येक विश्वासी को *दोष भावना, दासत्व (सामर्थ्य), भ्रष्टता* और पाप के *अंतिम दण्ड(सजा)* से बचाया गया है। वह पूर्ण रूप से क्षमा किया गया है, वह पाप के बंधनों से स्वतंत्र किया गया है, वह पवित्र जीवन जीने में समर्थ है और उसे कभी भी नरक में नहीं धकेला जाएगा।

चरण 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइए एक एक करके उस एक सत्य के लिए जिसे परमेश्वर ने हमें रोमियों 1:1–17 में सिखाया है, प्रार्थना करें। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग–अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *(प्रतिक्रियाएँ)* **दूसरों के लिए प्रार्थना**

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट) *(निर्धारित कार्य)* **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी नकल करने को कहें)।

1. <u>प्रतिबद्धता</u>। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर **रोमियों 1:1–17** का <u>प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें</u>।
3. <u>परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय</u>। प्रतिदिन **निर्गमन 1,2,3,4** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ।
   पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. याद करें। **(3) राज्य के सुसमाचार का प्रचार करें: मत्ती 24:14 ।**
   पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों को रोज दोहराएं।
5. <u>शिक्षा देना</u>। मत्ती 13:1–23; मरकुस 4:1–20 और लूका 8:1–15 में वर्णित **बीज बोने वाले के दृष्टांत** की तैयारी करें।
   दृष्टांतों की व्याख्या के लिए छः दिशानिर्देशों का उपयोग करें।
6. <u>प्रार्थना</u>। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर <u>अपने लेख का अद्यपन करें</u>। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।